

# কিরাতাজুনীয়ম্

## প্রথমঃ সর্গঃ

(১)

দুর্যোধনের রাজ্যশাসন সম্বন্ধীয় তথ্যসমূহ অবগত হয়ে যুধিষ্ঠিরের নিযুক্ত দূত বনেচরের দ্বৈতবনে আগমন।

শ্রিয়ঃ কুরুণামধিপস্য পালনীং  
প্রজাসু বৃত্তিং যমযুক্ত বেদিতুম্।  
স বর্ণিলিঙ্গী বিদিতঃ সমাযযৌ  
যুধিষ্ঠিরং দ্বৈতবনে বনেচরঃ ॥ ১ ॥

শ্রিয়ঃ কুরুণামধিপস্য পালনীং প্রজাসু বৃত্তিং যমযুক্ত বেদিতুম্।  
স বর্ণিলিঙ্গী বিদিতঃ সমাযযৌ যুধিষ্ঠিরং দ্বৈতবনে বনেচরঃ ॥ ১ ॥

গদ্যপাঠ : কুরুণাম্ অধিপস্য শ্রিয়ঃ পালনীম্ প্রজাসু বৃত্তিম্ বেদিতুম্ যম্ অযুক্ত সঃ বর্ণিলিঙ্গী বনেচরঃ বিদিতঃ (সন্) দ্বৈতবনে যুধিষ্ঠিরম্ সমাযযৌ। ১

বাচ্যান্তরম্ : যঃ অযুক্ত তেন বর্ণিলিঙ্গিনা বনেচরেণ বিদিতেন.....যুধিষ্ঠির সমাযযে। ১

শব্দার্থ : কুরুণাম (কুরুদেশের) অধিপস্য (রাজার) শ্রিয়ঃপালনীম্ (রাজলক্ষ্মী প্রতিষ্ঠার মূলস্বরূপ) প্রজাসু (প্রজাগণের প্রতি) বৃত্তিম্ (ব্যবহার) বেদিতুম্ (জানার জন্য) যম্ (যাকে — যে কিরাতকে) অযুক্ত (নিয়োগ করেছিলেন) সঃ বর্ণিলিঙ্গী (সেই ব্রহ্মচারীর বেশধারী) বনেচরঃ (বনেচর বা কিরাত) বিদিতঃ (অবগত হয়ে) দ্বৈতবনে (দ্বৈতনামক বনে) যুধিষ্ঠিরম্ (যুধিষ্ঠিরের নিকট) সমাযযৌ (উপস্থিত হয়েছিল)। ১

বঙ্গার্থ : কুরুরাজ দুর্যোধনের রাজলক্ষ্মী প্রতিষ্ঠার মূল হেতুস্বরূপ প্রজাদের প্রতি ব্যবহার জানার জন্য (যুধিষ্ঠির) যাকে (যে কিরাতকে) নিয়োগ করেছিলেন, ব্রহ্মচারীর বেশধারী সেই বনেচর বা কিরাত (সমস্ত বৃত্তান্ত) জেনে দ্বৈতবনে যুধিষ্ঠিরের নিকট উপস্থিত হয়েছিল। ১

বিশ্বস্ত চর হিসাবে যুধিষ্ঠিরের নিকট বনেচরের নির্দিধায় অপ্রিয় সত্য-ভাষণে

উদ্যোগ।

কৃতপ্রণামস্য মহীং মহীভূজে  
জিতাং সপত্নেন নিবেদয়িষ্যতঃ।  
ন বিব্যথে তস্য মনো ন হি প্রিয়ং  
প্রবক্তুমিচ্ছন্তি মৃষা হিতৈষিণঃ ॥ ২ ॥

কৃতপ্রণামস্য মহীং মহীভূজে জিতাং সপত্নেন নিবেদয়িষ্যতঃ।  
ন বিব্যথে তস্য মনো ন হি প্রিয়ং প্রবক্তুমিচ্ছন্তি মৃষা হিতৈষিণঃ ॥ ২ ॥

গদ্যপাঠ : কৃতপ্রণামস্য সপত্নেন জিতাং মহীং মহীভূজে নিবেদয়িষ্যতঃ তস্য  
মনঃ ন বিব্যথে। হি হিতৈষিণঃ মৃষা প্রিয়ম্ বক্তুম্ ন ইচ্ছন্তি। ২

বাচ্যান্তরম্ : মনসা.....হিতৈষিভিঃ.....ইষ্যতে। ২

শব্দার্থ : কৃতপ্রণামস্য (প্রণামপূর্বক) সপত্নেন (শত্রুকর্তৃক) জিতাং মহীম্ (জিত  
হয়েছে পৃথিবী) মহীভূজে (রাজাকে) নিবেদয়িষ্যতঃ (নিবেদন করার সময়) তস্য (তার)  
মনঃ (মন) ন বিব্যথে (ব্যথিত হল না)। হি (যেহেতু) হিতৈষিণঃ (মঙ্গলকামিগণ) মৃষা  
প্রিয়ম্ (মিথ্যা-প্রিয়বাক্য) বক্তুম্ (বলতে) ন ইচ্ছন্তি (চান না)। ২

বঙ্গার্থ : রাজাকে প্রণাম পূর্বক শত্রু (কিভাবে) পৃথিবী জয় করেছে — একথা  
রাজাকে নিবেদন করার সময় তার মন ব্যথিত হল না। কারণ মঙ্গলাকামিগণ মিথ্যা  
প্রিয়বাক্য বলতে ইচ্ছা করে না। ২

संस्कृत व्याख्या : महाकवि भारवि-विरचितस्य 'किरातार्जुनीयम्' महाकाव्यस्य प्रथमसर्गाद् गृहीतोऽयं श्लोकः।

कपटदूतेन हतराज्येन युधिष्ठिरेण द्वैतवने निवसता दुर्योधनस्य प्रजापालनवृत्तिं विज्जातुं नियुक्तश्चरो यदा तद् निवेदयितुमुद्युङ्क्त सुदा तस्य सत्यभाषण-प्रवृत्तिं वर्णयितुं कविना श्लोकोऽयमुक्तः।

कृतप्रणामस्य तत्कालोचितत्वात् कृत नमस्कारस्य सपत्नेन रिपुणा दुर्योधनेन जितां स्वायत्तीकृतां महीं महीभूजे युधिष्ठिराय निवेदयिष्यतः ज्ञापयिष्यतः तस्य वनेचरस्य मनः न विव्याथे । कथम् इदम् अप्रियं राज्ञे निवेदयिष्यामि इति मनसि न चाल इत्यर्थः । उक्तम् अर्थम् अर्थान्तरन्यासेन समर्थयते — न हीति — हि यस्मात् हितम् इच्छन्ति इति हितैषिणः स्वामिहितार्थिनः पुरुषः मिथ्याभूतं प्रियं प्रवक्तुं न इच्छन्ति । अन्यथा कार्यविघातकतया स्वामिद्रोहिणः सूरिति भावः ।

ततः दुर्योधनस्य राज्यशासननीतिविषयकानि वाक्यानि यद्यपि युधिष्ठिरस्य श्रुतिसुखकरानि न भवेयुः तथापि वनेचरस्य प्रीतिसम्पादनार्थं सत्यं सङ्गोप्य मृषाभाषणं कथयितुं नैच्छत् । यतः हितैषिणः अप्रियमपि सत्यमेव कथयन्ति । अपि च राजानः चारचक्षुषः चरमुखात् यथार्थं विषयं ज्ञात्वा कर्मविधानं नीतिनिर्धारणं वा कर्तुं शक्यते । अतः वनेचरेण अप्रियमपि सत्यभाषणं यथार्थं चारोचितं कर्म । यतः नीतिवाक्यामृते — 'अमौढ्यम् अमान्दम् अमृषाभाषित्वम् अभ्युहकत्वञ्च इति चारुगुणाः ।

अत्र अर्थान्तरन्यास इति अलङ्कारः । वंशशुबिलवृद्धम् ।

(৩)

বিদিত বৃশাস্ত বনার জন্য বনেচর কর্তৃক যুধিষ্ঠিরের অনুমতি গ্রহণ।

द्विषां विघाताय विधातुमिच्छतो  
रहस्यनुज्ञामधिगम्य भूभृतः।  
स सौष्ठवौदार्यविशेषशालिनीं  
विनिश्चितार्थामितिवाचमाददे ॥ ३ ॥

द्विषां विघाताय विधातुमिच्छतो रहस्यनुज्ञामधिगम्य भूभृतः।  
स सौष्ठवौदार्यविशेषशालिनीं विनिश्चितार्थामिति वाचमाददे ॥ ३ ॥

গদ্যপাঠ : সঃ রহসি দ্বিষাম্ বিঘাতায় বিধাতুম্ ইচ্ছতঃ ভূভৃতঃ অনুজ্ঞাম্  
অধিগম্য সৌষ্ঠবৌদার্য বিশেষশালিনীম্ বিনিশ্চিতার্থাম্ ইতি বাচম্ আদদে। ৩

বাচ্যাস্তরম্ : তেন.....শালিনী বিনিশ্চিতার্থা ইতি বাক্ আদদে। ৩

শব্দার্থ : স (সেই বনেচর) রহসি (নির্জনে বা একান্তে) দ্বিষাম্ বিঘাতায়  
(শত্রুদের বিনাশের জন্য) বিধাতুম্ ইচ্ছতঃ (উপায় অবলম্বন করতে ইচ্ছুক) ভূভৃতঃ  
(রাজার) অনুজ্ঞাম্ অধিগম্য (অনুমতি নিয়ে) সৌষ্ঠবৌদার্য (সুন্দর সুন্দর শব্দযুক্ত)  
বিশেষশালিনীম্ (বিশেষ অর্থশালী) [অর্থভূয়িষ্ঠ] বিনিশ্চিতার্থম্ (নিশ্চিতার্থক) বাচম্  
আদদে (কথাগুলি বলেছিল)। ৩

বঙ্গার্থ : শত্রুনাশের জন্য উপায় অবলম্বন করতে ইচ্ছুক রাজার (যুধিষ্ঠিরের)

অনুমতি নিয়ে সে (বনেচর) একান্তে শোভনশব্দবিশিষ্ট, অর্থভূয়িষ্ঠ এবং অসন্দিদ্ধার্থ  
(পরবর্তী) কথাগুলি বলেছিল। ৩

নিজের প্রযুক্ত্যমান বাক্যের জন্য ক্ষমা প্রার্থনা সূচক — বনেচরের প্রথম উক্তি —

ক্রিয়াসুযুক্তৈর্নৃপ চারচক্ষুষো  
ন বঞ্চনীয়াঃ প্রভবোহনুজীবিভিঃ ।  
অতোহঁসি ক্ষন্তুমসাধু সাধু বা  
হিতং মনোহারি চ দুর্লভং বচঃ ॥ ৪ ॥

ক্রিয়াসু যুক্তৈর্নৃপ চারচক্ষুষঃ ন বঞ্চনীয়াঃ প্রভবোহনুজীবিভিঃ ।  
অতোহঁসি ক্ষন্তুমসাধু সাধু বা হিতং মনোহারি চ দুর্লভং বচঃ ॥ ৪ ॥

গদ্যপাঠ : হে নৃপঃ! ক্রিয়াসুযুক্তৈঃ অনুজীবিভিঃ চারচক্ষুষঃ প্রভবঃ ন  
বঞ্চনীয়াঃ। অতঃ সাধু অসাধু বা ক্ষন্তুম্ অহঁসি। হিতং মনোহারি চ বচঃ দুর্লভম্। ৪

বাচ্যান্তরম্ : .....যুক্তাঃ অনুজীবিনঃ.....প্রভূন্ ন বঞ্চয়েষুঃ। .....অর্হতে।  
হিতেন মনোহারিণা বচসা দুর্লভন ভূয়তে। ৪

শব্দার্থ : হে নৃপ! (হে মহারাজ!) ক্রিয়াসু (কর্মসমূহে) যুক্তৈঃ অনুজীবিভিঃ  
(যুক্ত ভৃত্যদের দ্বারা) চারচক্ষুষঃ প্রভবঃ (চারচক্ষু প্রভুগণ) ন বঞ্চনীয়াঃ (বঞ্চনার যোগ্য  
নয়) অতঃ (অতএব) সাধু-অসাধু বা (প্রিয় হোক বা অপ্রিয় হোক) ক্ষন্তুম্ অহঁসি  
(আপনার ক্ষমা কর্তব্য) হিতং মনোহারি (হিতকর অথচ মনোহর) বচঃ (বাক্য) দুর্লভম্  
(দুর্লভ)। ৪

বঙ্গার্থ : হে রাজন! কার্যে নিযুক্ত ভৃত্যদের চারচক্ষু প্রভুগণকে অর্থাৎ  
নৃপতিগণকে প্রতারণা করা উচিত নয়। অতএব (আমার কথা) প্রিয় হোক বা অপ্রিয়  
হোক — তা আপনি ক্ষমা করবেন। কারণ হিতকর অথচ মনোহর বাক্য (জগতে)  
দুর্লভ। ৪

संस्कृत व्याख्या : महाकवि.....श्लोकः (पूर्ववत्) ।

कपटद्यूतेन हतसर्वस्वेन द्वैतवने निवसता युधिष्ठिरेण दुर्योधनस्य  
प्रजापालनवृत्तिं विज्जातुं नियुक्तश्चरो बनेचरो विदितवृत्तान्तः प्रत्यागम्य युधिष्ठिराय  
निवेदनात् प्राक् अप्रियनिवेदकम् आत्मानं प्रति अक्लोभं याचमान आह क्रियासु इति ।

हे नृपः! क्रियासु कृत्यवस्तुषु युक्तेः नियुक्तेः अनुजीविभिः भृत्यैः चारादिभिः  
इत्यर्थः। चरन्ति इति चराः, ते एव चाराः ते एव चक्षुः येषां ते चारचक्षुषः।  
स्वपरमणुले कार्याकार्यावलोकने चाराश्चक्षुषि क्षितिपतीनाम् इति नीतिवाक्यामृते।  
तदुक्तम् — 'गावः पश्यान्ति गन्धेन वेदैः पश्यान्ति पण्डिताः। चारैः पश्यान्ति  
राजानश्चक्षुर्भ्यामितरे जनाः' ॥ प्रभव निग्रहानुग्रहसमर्थाः स्वामिनः न प्रतारणीया सत्यमेव  
वक्तव्या इत्यर्थः। अतः अप्रतार्यत्वाद् हेतोः असाधु अप्रियं साधु प्रियं वा मदुक्तम् इति  
शेषः। ऋतुम् सोढुम् अर्हसि। कुतः हितं पथ्यं मनोहारि प्रियं च वचः दुर्लभम्। ततो  
मद्वचोऽपि हितत्वात् अप्रियमपि ऋतुव्यम्।

यतः राजानः चारैरेव स्वराष्ट्रवृत्तं पराराष्ट्रवृत्तमपि ज्ञातुं शक्नुवन्ति कर्मपञ्चानमपि  
निर्णीयन्ते च। अतः क्रियासु युक्तेः चारैः मृषा अप्रियवचनेन राजानः कदापि न वक्षणीयाः।

यद्यपि इहजगति प्रायशः जनाः हितं मनोहरं आप्नुमिच्छन्ति, किन्तु जगति एते  
एकत्र दुर्लभे एव। यथा जीवनदायिनः अगदाः प्रायेण कटुरसाश्चिता भवन्ति तथा परिणामे

हितकरा मनोहारिणी वाणी न हि सुलभा। अतः वनेचरसा वचनम् अप्रियमपि युक्तिरेण  
स्वीकार्यमिति भावः।

(৫)

বনেচরের দ্বিতীয় উক্তি — সমৃদ্ধিলাভের জন্য রাজার বিশ্বস্ত অনুচরদের পরামর্শ গ্রহণ এবং তাঁদের সঙ্গে সুসম্পর্ক স্থাপন করা উচিত।

‘স কিংসখা সাধু ন শাস্তি যোঃধিপং  
হিতান্ন যঃ সংশৃণুতে স কিম্প্রভুঃ।  
সদানুকূলেষু হি কুর্বতে রতিং  
নৃপেষুমাতেষু চ সর্বসম্পদঃ ॥ ৫ ॥

স কিংসখা সাধু ন শাস্তি যোঃধিপং হিতান্ন যঃ সংশৃণুতে স কিম্প্রভুঃ।  
সদানুকূলেষু হি কুর্বতে রতিং নৃপেষুমাতেষু চ সর্বসম্পদঃ ॥ ৫ ॥

গদ্যপাঠ : যঃ অধিপং সাধু ন শাস্তি স কিংসখা, যঃ হিতাৎ ন সংশৃণুতে সঃ  
কিম্প্রভুঃ। হি নৃপেষু অনুকূলেষু সর্বসম্পদঃ সদা রতিং কুর্বতে। ৫

বাচ্যান্তরম্ : যেন অধিপং সাধু ন শিষ্যতে তেন কিংসখিনা, যেন.....সংশ্রয়তে  
তেন কিম্প্রভুনা,.....সর্বসম্পদভিঃ সদা রতিঃ ক্রিয়তে। ৫

শব্দার্থ : যঃ (যিনি) অধিপম্ (রাজাকে) সাধু (সৎ) ন শাস্তি (উপদেশ দেন না)  
সঃ (তিনি) কিংসখা (কুৎসিত বন্ধু), যঃ (যিনি) হিতাৎ (হিতৈষীর নিকট থেকে) ন  
সংশৃণুতে (কথা শোনে না) সঃ (তিনি) কিম্প্রভুঃ (কুৎসিত প্রভু)। হি (যেহেতু) নৃপেষু  
অমাতেষু চ (রাজা এবং মন্ত্রিগণ)। সদা অনুকূলেষু (সবসময় একমত হলে) সর্বসম্পদঃ  
(সকল রকম সম্পদ) রতিম্ (অনুরাগ) কুর্বতে (প্রকাশ করে)। ৫

বঙ্গার্থ : যিনি (যে মন্ত্রী) রাজাকে সদুপদেশ দেন না, তিনি কুৎসিত সখা বা  
দুর্মন্ত্রী, যে প্রভু (রাজা) হিতৈষীর নিকট সদুপদেশ শোনে না তিনি কুৎসিত প্রভু। রাজা  
ও মন্ত্রিগণ পরস্পর অনুকূল বা একমত হলে সমস্ত সম্পদ সর্বদা (তাঁদের প্রতি) অনুরক্ত  
হয়। ৫

संस्कृत व्याख्या : महाकवि .....श्लोकः (पूर्ववत्)।

कपटद्यूतेन हातसर्वस्वेन द्वैतवने निवसता युधिष्ठिरेण दुर्योधनस्य प्रजापालनवृत्तिं विज्जातुं नियुक्तश्चरो वनेचरो विदितवृत्तांतुः प्रत्यागम्य युधिष्ठिराय निवेदनात् प्राक् तस्य वाक्यश्रवणस्य उपयोगमृच्छिष्य वनेचर आह स किमिति । यः सखा अमात्यादिः अधिपं साधु हितं न शक्ति न उपदिशति स किंसखा दुर्मन्त्री इत्यर्थः । यः प्रभुः निग्रहानुग्रहसमर्थः स्वामी हितात् आप्तुजनात् न संशृणुते न शृणोति, सः किम्प्रभुः कुत्सित स्वामी । हि यस्मात् नृपेषु स्वामिषु अमात्येषु अनुकुलेषु परस्परानुरक्तेषु सत्सु सर्वसम्पदः सदा रतिम् अनुरागं कुर्वते कुर्वन्ति ।

अतो राजसचिवयोः परस्परम् आनुकूल्यं राज्यासम्बन्धिमूलम् इति । तेन मन्त्रिणा नृपाय हितम् कथनीयम् नृपेणापि हितोपदेशः श्रोतव्यः एवं नृपमन्त्रिणोः यदि एक्यमत्यं जायते तर्हि तद्राज्ये सदैव सुखसम्बन्धि-विराजते इति भावः । अत्रार्थासुरन्यास इति अलंकारः । वंशसुविलंबम् ।